रिकार्ड– आने वाले कल की तुम तकदीर हो.....ओमशांति प्रातःक्लास 16.12.67

ओमशांति। बच्चों ने गीत की लाइन सुनी। आने वाला है अमरलोक। और यह है मृत्युलोक। अमरलोक और मृत्युलोक का भी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। अब बाप पढ़ाते हैं संगम पर। आत्माओं को पढ़ाते हैं। इसलिए बच्चों को कहते हैं आत्माभिमानी होकर बैठो। यह निश्चय करना है हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। हमारी एम ऑब्जेक्ट है ही ल.ना. वा मनुष्य से देवता बनाना। मृत्युलोक के मनुष्य से अमरलोक देवता बनना। ऐसी पढ़ाई तो न कब कानों से सुनी ,न किसको कहते हुए देखा जो कहे बच्चों तुम आत्माभिमानी हो बैठो। यह निश्चय करो बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। कौन सा बेहद का बाप?निराकार शिव। अभी तुम समझते हो हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। अभी तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय बने हो। फिर तुमको देवता बनना है। पहले शूद्र सम्प्रदाय के थे। जो ब्राह्मण नहीं बने हैं उनको कहेंगे शूद्र–शूद्र बुद्धि। पत्थर बुद्धि। बाप आकर पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं। यही ल.ना. की आत्मा 84जन्मों के बाद फिर तमोप्रधान पत्थर बुद्धि बन जाती है। पहले सतोप्रधान पारसबुद्धि थे। ऐसे नहीं कहना चाहिए कि सतयुग के मालिक थे। सतयुग में विश्व के मालिक थे। फिर 84जन्म लेते2 सीढ़ी उतरते2 सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो में आये हैं। फिर आत्मा में खाद पड़ती है। मनुष्य समझते नहीं हैं कि हम पत्थर बुद्धि हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम भी कुछ नहीं जानते थे। सिवाय जानने के किसकी पूजा करना वा याद करना इसको ब्लाइंड फेथ कहा जाता है और अपने श्रेष्ठ धर्म,कर्म को भूल जाने से फिर वह धर्म भ्रष्ट ,कर्म भ्रष्ट बन पड़ते हैं। भारतवासी इस समय दैवी धर्म से भी भ्रष्ट हैं। बाप समझाते हैं तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले वही देवी देवताएं ;परंतु अपवित्र बने हो तो देवी–देवता कहलाय नहीं सकते हो। इसलिए नाम बदल हिंदू धर्म रख दिया है। इसको कहा जाता है ब्लाइंडफेथ का धर्म। यह भी होता है ड्रामाप्लेनअनुसार। यह भी जानते हो यह पतित दुनियां है। पावन दुनियां सतयुग को कहा जाता है। सभी एक बाप को ही पुकारते हैं पतित–पावन आओ। वह एक ही गॉडफादर है, जो जन्म–मरण से रहित है। ऐसे नहीं कि नाम–रूप से न्यारा कोई चीज है। आत्मा को(का) वा परमात्मा का रूप बहुत सूक्ष्म है,जिसको स्टार वा बिंदी भी कहते हैं। शिव की पूजा करते हैं। शरीर तो हूं(है) नहीं। अब आत्मा बिंदी की पूजा तो हो न सके। इसलिए उनको बड़ा बनाकर पूजा करते हैं। समझते हैं हम शिव की पूजा करते हैं ;परंतु उनका रूप क्या है यह नहीं जानते। समझते हैं आत्मा अंगुष्ठे मिसल है। अंगुष्ठा तो बड़ा होता है। आत्मा के लिए तो कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है गजब सितारा। यह भी बातें बाप इस समय ही आकर समझाते हैं। आत्मा अविनाशी है ,शरीर विनाशी है। आत्माएं नंगे आती हैं। यहां शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। फिर एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। 84लाख जन्मों का तो एक गपोड़ा लगा दिया है। अब बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। अभी तुम ब्राह्मण बने, फिर देवता बनना है। कलियुगी मनुष्य हैं शूद्र। तुम ब्राह्मणों की एम ऑब्जेक्ट ही है मनुष्य से देवता बनना। यह मृत्युलोक पतित दुनियां है। नई दुनिया वह थी जहां यह देवी–देवताएं राज्य करते थे। एक ही इनका राज्य था। यह सारी विश्व के मालिक थे। अभी तो तमोप्रधान दुनियां है। अनेक धर्म हैं। यह देवी–देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। देवी–देवताओं को राज्य कब था, कितना समय चला, इस वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी को कोई भी नहीं जानते। बाप ही आकर तुमको समझाते हैं। यह है फादरली यूनिवर्सिटी। जिसकी एम ऑब्जेक्ट है अमरलोक का देवता बनना। इनको अमरलोक कथा भी कहा जाता है। तुम इस नालेज से देवता बन काल पर जीत पहनते हो। वहां कब काल नहीं खा सकता। मरने का वहां नाम नहीं रहता। अब तुम काल पर जीत पहन रहे हो। ड्रामा के प्लेन अनुसार। भारतवासी भी 5/10 वर्ष का प्लैन बनाते हैं। समझते हैं हम रामराज्य की स्थापना कर रहे हैं। बेहद के बाप का भी प्लैन है रामराज्य बनाने का। वह तो (सब) हैं मनुष्य। मनुष्य रामराज्य की स्थापना कर न सके। रामराज्य कहा ही जाता है सतयुग को। इन बातों को

कोई नहीं जानते हैं। आधा कल्प है दिन ज्ञान मार्ग। आधा कल्प है रात भक्तिमार्ग। मनुष्य कितने भक्ति करते हैं। जिस्मानी यात्रायें करते हैं। दिन अर्थात् सतयुग–त्रेता में (उन) देवी–देवताओं का राज्य था। फिर रात में भक्तिमार्ग शुरू होता है। सतयुग में भक्ति होती नहीं। ज्ञान,भक्ति,वैराग्य। यह भी बाप समझाते हैं वैराग्य दो प्रकार का है। एक है हठयोगी निवृत्ति मार्गवालों का ,वह घर–बार छोड़ जंगल में चले जाते हैं। अभी तुमको तो बेहद का सन्यास करना है इस सारी मृत्युलोक का। बाप कहते हैं यह सारी दुनियां भस्मीभूत होने वाली है। ड्रामा को बहुत अच्छी रीत समझाना है। जूं मिसल टिक2 होती रहती है। जो कुछ होता है फिर कल्प 5000वर्ष बाद हूबहू रिपीट होगा। इसको बहुत अच्छी रीत समझने का है। समझो कोई विलायत में जाते हैं कहेंगे हम वहां नालेज पढ़ सकते हैं। बाप कहते हैं हां, कहां भी बैठे तुम पढ़ सकते हो। इसमें पहले सात रोज का कोर्स लेना पड़ता है। है बहुत सहज। आत्मा को सिर्फ यह समझना होता है हम सतोप्रधान थे तो सतोप्रधान विश्व के मालिक थे। अभी तमोप्रधान हो गए हैं। 84जन्मों में बिल्कुल ही बर्थ नॉट अ पेनी बन गए हैं। फिर हम पाउंड कैसे बनें?अभी कलियुग है तो जरूर सतयुग होना है। बाप कितना सिम्पल समझाते हैं। सात दिन का कोर्स समझना है। कैसे हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। काम चिक्षा पर बैठ तमोप्रधान बन गए हैं। अब फिर ज्ञान चिक्षा पर बैठ सतोप्रधान बनना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है। चक्र फिरता है ना। अभी है संगमयुग। फिर सतयुग होगा। अभी हम कलियुगी विषस बने हैं। सो फिर सतयुगी वायसलेस कैसे बने। इसके लिए ही बाप रास्ता बताते हैं। पुकारते भी हैं हमारे में कोई गुण नहीं है। अब हमको ऐसा गुणवान बनाओ। जो कल्प पहले बने थे उन्हों को ही फिर बनना है। बाप समझाते हैं पहले2 अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। अभी तुमको देही अभिमानी बनना है। अभी ही तुमको देहीअभिमानी बनने बाप समझाते हैं। ऐसे भी नहीं कि तुम सदैव देही अभिमानी रहेंगे। सतयुग में तो नाम शरीर की ही रहती है। ल.ना. के नाम से ही सारा कारोबार चलती है। अभी यह है संगमयुग जबकि बाप समझाते हैं। तुम नंगे आये अब फिर नंगे ही वापस जाना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से पाप भस्म हो जावेंगे। इनको योग अग्नि भी कहा जाता है। याद में तो तुम कहां भी रह सकते हो। सात रोज में समझाना होता है। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है,कैसे हम सीढ़ी उतरे हैं। फिर अब इस एक ही जन्म में चढ़ती कला होती है। विलायत में बच्चे रहते हैं वहां भी मुरली जाती है। यह स्कूल है ना। वास्तव में यह है गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। गीता का ही राजयोग है ;परंतु गीता कृष्ण की है नहीं। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जाता। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को भी देवता कहा जाता है। अभी तुम पुरुषार्थ कर फिर सो देवता बनते हो। प्रजापिता ब्रह्मा भी जरूर यहां होगा ना। सूक्ष्मवतन में कहां से आवेगा?प्रजापिता तो मनुष्य है ना। प्रजा जरूर यहां ही रची जाती है। शूद्र से ब्राह्मण बनते हो फिर देवता। इस समय तुम कहेंगे हम सो ब्राह्मण बनते हैं। पहले शूद्र थे। अभी ब्राह्मण बने फिर सो देवता बनेंगे, फिर सो क्षत्रिय सो वैश्य बनेंगे। हम सो का अर्थ तो बाप ने बहुत सहज करके समझाया हे। भक्तिमार्ग में तो कह देते हैं ह मसो आत्मा सो परमात्मा। इसलिए परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं। बाप कहते हैं सबमें व्यापक तो आत्मा है। मैं कैसे व्यापक होंगा। तुम मुझे बुलाते ही हो हे पतित–पावन आओ। हमको पावन बनाओ। निराकार आत्मा आय अपना2 रथ लेती है। हरेक आत्मा का अकालतख्त यह है। तख्त कहो अथवा रथ कहो। बाप को तो रथ है नहीं। वह निराकार ही गाया जाता है। न सूक्ष्म शरीर है ,न स्थूल शरीर है। निराकार जब खुद रथ में बैठे तब बोल सके। रथ बिगर पतित को पावन कैसे बनावेंगे? बाप कहते हैं मैं निराकार आकर इनका लोन लेता हूं। टेम्परी लोन लिया है। इनको भाग्यशाली रथ भी कहा जाता है। बाप ही सृष्टि के आदि,मध्य,अंत

का राज़ बताकर तुम बच्चों को त्रिकालदर्शी बनाते हैं। और कोई मनुष्य मात्र यह नालेज जान नहीं सकते। ऋषि–मुनि भी कहते थे हम नहीं जानते। नेति2 कहते थे। गोया नास्तिक हो गए। इस समय सभी नास्तिक हैं। बाप आकर नास्तिक(आस्तिक) बनाते हैं। रचता और रचना का राज बाप ने बताया है। अब तुम्हारे सिवाय और कोई समझा न सके। तुम ही इस ज्ञान से फिर इतना उंच पद पाते हो। यह ज्ञान सिर्फ अभी ही तुम ब्राह्मणों को मिलता है। बाप संगम पर ही आय यह ज्ञान देते हैं। सदगति देने वाला भी एक बाप ही है। मनुष्य मनुष्यों को सदगति दे न सके। वह सब गुरू हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान मार्ग का गुरू एक ही है। उनको कहा जाता है सदगुरू। वाह गुरू। बाकी जो भी गुरू लोग हैं उन्हों का तो कोई एम ऑब्जेक्ट है नहीं। इनको पाठशाला कहा जाता है। एम ऑब्जेक्ट है नर से नारायण बनने की। वह सब हैं भक्तिमार्ग की कथायें। भक्तिमार्ग के जो भी शास्त्र हैं मैं तुम बच्चों (को) सम्मुख आकर पढ़ाता हूं, जिससे तुम यह पद पाते हो। और कोई भी मनुष्य मात्र पढ़ा न सके। बाप ही पढ़ाने लिए एक ही बार संगम पर आते हैं। विषस दुनियां को वायसलेस बनाते हैं। इसमें मुख्य है पवित्र बनने की बात। बाप की याद में रहना है। इसमें ही माया विघ्न डालती है। तुम बाप को याद करते हो अपना वर्सा पाने लिए। यह नालेज सब बच्चों के पास जाती है। कब भी मुरली मिस न हो। मुरली मिस हुई गोया अबसेंट पड़ जाती है। मुरली से कहां भी बैठे रिफ्रेश होते रहेंगे। श्रीमत पर चलना पड़े। बाहर में भी जाते हैं तो बाप समझाते हैं पवित्र तो रहना ही है। वैष्णव भी होना है। वैष्णव भी दो प्रकार के होते हैं। वैष्णववल्लभाचारी भी होते हैं ;परंतु वह विकार में जाते हैं। पवित्र तो हैं नहीं। तुम पवित्र बन वैष्णववंशी बनते हो। वहां तुम वैष्णव रहेंगे। विकार में नहीं जावेंगे। वह है ही अमरलोक । यह है मृत्युलोक। विकार में जाते हैं। अभी तुम विष्णुपुरी में जाते हो। वहां विकार होता नहीं। वह है ही वायसलेस वर्ल्ड। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। वह दोनों आपस में लड़ते हैं, मक्खन बीच में तुमको मिलता है। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। सभी को यही पैगाम देना है। छोटे बच्चों को भी हक है। शिवबाबा के बच्चे हैं ना। तो सबका हक हे। सबको कहना है अपन को आत्मा समझो। मां–बाप में ज्ञान होगा तो बच्चों को भी सिखावेंगे शिवबाबा को याद करो। सिवाय शिवबाबा के दूसरा न कोई । एक बाप की याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें पढ़ाई बहुत अच्छी चाहिए। विलायत में रहते भी तुम पढ़ सकते हो। इसमें किताब आदि कुछ भी न चाहिए। कहां भी बैठे तुम पढ़ सकते हो। बुद्धि से याद कर सकते हो। यह पढ़ाई इतनी सहज है। योग अथवा याद से ही बल मिलता है। तुम अभी विश्व के मालिक बन रहे हो। बाप राजयोग सिखाकर पावन बनाते हैं। वह है हठयोग। यह है राजयोगं सन्यासी कब राजयोग सिखाय न सके। इसमें परहेज भी बहुत अच्छी चाहिए। इन(ल.ना.) जैसा सर्वगुण सम्पन्न बनना। खान–पान की भी बहुत अच्छी परहेज चाहिए। और दूसरी बात कि बाप को याद करना है। तो जन्म जन्मांतर के पापं कट जावेंगे। इसको कहा जाता है सहज रोज(योग)। राजाई प्राप्त करने लिए। अगर राजाई न ले तो गरीब बन जावेंगे। श्रीमत पर पूरा चलने से श्रेष्ठ बन जावेंगे। इसके लिए बाप को याद करना है। कल्प पहले भी तुमने ही यह ज्ञान लिया था जो फिर अब लेते हो। सतयुग में और कोई राज्य था नहीं। इसको कहा जाता है सुखधाम। अभी यह है दुःखधाम। और जहां से हम आत्माएं आते हैं वह है शांतिधाम। शिवबाबा को वंडर लगता है। दुनियां में मनुष्य क्या2 करते रहते हैं। बच्चे कम पैदा हों इसके लिए माथा मारते हैं। समझते नहीं हैं यह तो बाप का ही काम है। बाप एक धर्म की स्थापना ,अनेक धर्मों का विनाश कराय देते हैं। वह लोग कितने दवाईयां आदि निकालते हैं पैदाइश कम होने लिए। बाप के पास एक ही दवाई है। एक धर्म की स्थापना होनी ही है। वह समझ आवेगा। सब समझेंगे यह तो पवित्र बन रहे हैं। फिर दवाई आदि की भी दरकार नहीं। तुमको बाबा ने ऐसी दवाई दी है मनमनाभव की जो 21जन्म लिए पवित्र बनते हो। अच्छा,गुडमार्निंग।